Pol. Sc

Degree IIIrd Paper 6th Political thought

Rousseau – Social Contract

रूसो का सामाजिक समझौते का सिद्धान्त

राजनीतिक चिन्तन के इतिहास में अनुबंध और अनुबंधवादियों के प्रसंग में सामाजिक समझौते का विवरण मिलता है। सामाजिक समझौते के संबंध में अनुबंधवादियों ने भिन्न-भिन्न विचार दिए है। "हॉब्स" के अनुसार प्राकृतिक अवस्था में रहनेवाले दुष्ट, पापी, क्रूर और कठोर व्यक्तियों ने अराजकता की स्थिति पैदा कर दी जिससे सामाजिक समझौते की आवश्यकता पड़ी। "लॉक" ने कहा कि अपनी बुद्धि और विवेक से प्राकृतिक नियमों का पालन करने वाले प्राकृतिक मनुष्यों के समाज में कुछ ऐसे नीच और क्षुद्र मनुष्य होते थे जिनसे मुक्ति पाने के लिए सामाजिक समझौते की आवश्यकता पड़ी। रूसो ने अपनी पुस्तक Social contract में जिसकी रचना 1762 में की थी जिसमें दोनो विचारको से भिन्न मत दिए है, रूसो के अनुसार " जब वैयक्तिक सम्पत्ति के साँप ने प्राकृतिक अवस्था के मनुष्यों डस लिया तो इनमें इतनी विषमता और अन्य अनेक बुराइयाँ घर कर गई कि उन लोगों ने विनष्ट होने से बचने के लिए तथा शांति व्यवस्था की स्थापना के लिए एक आदर्श राज्य का स्थापन लिए सामाजिक समझौते का मार्ग अपनाया।

रूसो ने अपने सामाजिक समझौते में प्राकृतिक मनुष्यों की समस्या का उल्लेख किया है " समस्या एक ऐसे संस्था के निर्माण की है जो सम्पूर्ण समुदाय की शक्ति के साथ प्रत्येक व्यक्ति की जान माल की रक्षा करे, तथा जिसके द्वारा दूसरो के द्वारा एक होते हुए भी प्रत्येक व्यक्ति अपने आदेश का पालन करे और पहले की तरह स्वतंत्र रहें", इस प्रकार रूसो ने सामाजिक समझौते के माध्यम से एक नैतिक और सामूहिक निकाय को जन्म दिया। सामाजिक समझौते के महत्व को स्पष्ट करते हुए रूसो ने लिखा है कि "मनुष्य को इस सुखद क्षण को सदैव शुभाशीष देना चाहिए जिससे उसे प्राकृतिक दशा से निकालकर एक जड़मति जीवधारी से एक बुद्धिमान प्राणी बनाया।

रूसो (Rousseau) के द्वारा वर्णित सामाजिक समझौता दो पक्षों के बीच होता है, एक पक्ष में व्यक्ति का सामूहिक रूप होता है, दूसरे पक्ष में व्यक्ति अपने नैयक्तिक रूप में होता है। व्यक्तियों के सामूहिक रूप को सार्वजनिक व्यक्ति (Public Person) की संज्ञा दी है, क्यों कि इसमें अपनी एकता, अपनी स्वतंत्रता तथा अपनी इच्छा होती है। इसे पहले नगर कहा जाता था, आजकल इसे गणराज्य की संज्ञा दी जाती है। रूसो के अनुसार इसके निष्क्रिय रूप को राज्य तथा सक्रिय रूप को संप्रभु कहते हैं।

सामाजिक समझौते सिद्धान्त की विशेषताएँ :— रूसो का सामाजिक समझौता प्राकृतिक अवस्था के अन्तिम में संपन्न होता है। जब व्यक्तिगत सम्पत्ति तथा भयानक विषमता के संदर्भ में व्यक्ति अनेक बुराईयों का शिकार हो गया, तब व्यक्तियों ने अपनी जान-माल की रक्षा तथा शांति की स्थापना के उद्देश्य से परस्पर समझौता किया।

1. समझौता प्राकृतिक अवस्था के अन्तिम चरण में :— रूसो का सामाजिक समझौता प्राकृतिक अवस्था के अन्तिम चरण में सम्पन्न होता है। जब व्यक्तिगत सम्पत्ति तथा भयानक विषमता के संदर्भ में व्यक्ति अनेक बुराइयों के शिकार हो गये तो उन लोगों ने अपने जान-माल की रक्षा तथा शांति की स्थापना के उद्देश्य से परस्पर समझौता किया।

2. समझौते के दो पक्ष :— रूसो के समझौते में दो पक्ष है एक पक्ष में व्यक्तियों का साझूहिकरूप आता है, तथा दूसरे पक्ष में व्यक्तियों के अलग-अलग रूप दोनो पक्ष व्यक्तियों से ही बनते है। सामूहिक पक्ष में सामान्य इच्छा निवास करती है, अतः यह पक्ष अधिक महत्वपूर्ण है। रूसो ने यह बताना चाहा है कि चूंकी व्यक्ति ही अपने दो स्वरूपों के मध्य समझौता करते है, अतः वे प्रजा और संप्रभु दोनो है।

3. समझौते से संप्रभु राज्य की उत्पत्ति :— रूसो के सामाजिक समझौता से एक संप्रभु राज्य की उत्पत्ति होती है। मनुष्यों में समता नाम की कोई चीज नहीं बची थी। किसी के जान माल की कोई सुरक्षा नहीं थी। इस अराजकता का अन्त करने के लिए मनुष्यों ने सामाजिक समझौता किया

Scanned with CamScanner

जिसमें सभी ने अपनी शक्ति और अधिकारों को सामान्य इच्छा के निर्देशन में सामुदायिक बनाया। इस प्रकार रूसो ने यह सिद्ध किया की समझौते से एक संप्रभु राजनीतिक समाज की उत्पत्ति हुई।

4. सामान्य इच्छा सर्वोच्च :— रूसो के मत में सामाजिक समझौता सामान्य इच्छा द्वारा निर्देशित समाज को जन्म देता है। सामान्य इच्छा वह इच्छा है जो अलग-अलग व्यक्तियों की वैयक्तिक इच्छाओं के स्थान पर सामान्यहित की अभिवृद्धि हेतु संप्रभु रूप में प्रतिष्ठित की जाती है। सामान्य इच्छा संप्रभुता की सभी विशेषताओं को धारण करती है। इसमें संपूर्ण समाज का सामान्य हित संभव होता है।

5. समझौते की राज्यव्यवस्था एक आदर्श :— रूसो का सामाजिक समझौता एक आदर्श राज्यव्यवस्था की उत्पत्ति करता है। इस राज्य व्यवस्था में सामाजिक विषमता का अन्त होता है। Laski (लॉस्की) ने इस संबंध में कहा है कि "हमें एक ऐसे प्रतिष्ठान की आवश्यकता है जो एक ही साथ व्यक्ति तथा उन संस्थाओं को जो आज उन्हें भ्रष्ट कर रही हैं, पुनर्निर्माण करेगी"।

6. समझौते का प्रतिफल पूर्ण एकता :— रूसो का सामाजिक समझौता समाज में पूर्ण एकता की स्थापना करता है। समझौते में प्रत्येक व्यक्ति अपने शरीर और शक्ति को समुदाय के नाम पर अर्पित कर देता है। व्यक्ति स्वेच्छा से सामान्य इच्छा की अधीनता स्वीकार करते हैं। अतः सामाजिक समझौता समानता और एकता के आधार पर पूर्ण एकता की स्थापना करता है।

7. व्यक्ति प्रजा और संप्रभु दोनों :— मनुष्य अपने व्यक्तिगत वैयक्तिक रूप में प्रजा, तथा सामूहिक रूप में संप्रभु होते हैं। रूसो का सामाजिक समझौता में भाग लेने वाले व्यक्तियों को प्रजा और संप्रभु दोनों बनाता है। इस प्रकार रूसो ने सामूहिक एकता की उत्पत्ति की है, जिसमें व्यक्ति ही राज्य, प्रभुशक्ति, नागरिक, जनता और प्रजा सब कुछ है।

Scanned with CamScanner

8. समझौते से उत्पन्न समाज सावयविक (The Community Originating from the Contract is Organic) - जिस प्रकार शरीर के किसी अंग को अलग नहीं किया जा सकता, उसी प्रकार समाज से कोई व्यक्ति अपना संबंध विच्छेद नहीं कर सकता। हम देखते हैं कि हॉब्स, लॉक की भाँति रूसो व्यक्तिवादी नहीं है। रूसो ने इसके आंगिक स्वरूप को स्पष्ट करते हुए कहा है कि " राजनीतिक समाज की व्यवस्थापिका सिर के समान कार्यकारिणी भुजा के समान तथा न्यायपालिका मस्तिष्क के समान होती है। कृषि उद्योग और व्यवसाय उदर के समान तथा राजस्व रक्त के भाँति होते हैं।

9. समझौता सरकार का निर्माण नहीं करता :— रूसो के सामाजिक समझौते से किसी सरकार का नहीं, बल्कि संपूर्ण प्रभुत्व सम्पन्न राजनीतिक समाज का निर्माण होता है। सरकार को रूसो ने मात्र एक माध्यम बनाया है, जिसे राजनीतिक समाज सामान्य इच्छा को क्रियान्वित करने के लिए बनाता है।

उपरोक्त विशेषताओं के आधार पर हम कह सकते हैं कि रूसो पर हॉब्स और लॉक के विचारों का प्रभाव पड़ा, "हॉब्स" की भाँति यह माना है कि अराजकता का अन्त करने के लिए सामाजिक समझौता किया गया उसने यह भी माना है कि व्यक्तियों ने बिना किसी शर्त के अपने सारे अधिकार और शक्ति का समर्पण कर दिया। "लॉक" की भाँति यह माना है कि समझौते के बाद व्यक्तियों की अलग-अलग सत्ता के स्थान पर एक सामुदायिक सत्ता का निर्माण होता है।

रूसो के सामाजिक समझौते सिद्धान्त की बहुत से विचारकों के द्वारा आलोचना की गयी, लेकिन विभिन्न आलोचकों के आलोचनाओं के बावजूद रूसो के सामाजिक समझौता का अपना महत्व है। रूसो सामाजिक समझौते के माध्यम से सम्पूर्ण समाज तथा सामान्य इच्छा की धारणा को प्रतिष्ठित करके दैवी सिद्धान्त तथा दासप्रथा का घोर विरोध किया, रूसो का समझौता यह स्पष्ट करता है कि मनुष्य समाज के साथ एकाकार होकर अपनी समस्याओं का निराकरण कर सकते हैं।

Scanned with CamScanner